ODM
EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हिंदी ऑनलाइन कक्षा

कक्षा - नवी

विषय – हिंदी
पाठ : २
पाठ का नाम :दुःख का अधिकार
PPT 3

CHANGING YOUR TOMORROW

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org

Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

4. सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने दियासलाई की तीली से कान खुजाते हुए कहा,"अरे, इन लोगों का क्या है? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।"

परचून की दुकान पर बैठे लाला जी ने कहा," अरे भाई, उनके लिए मरे जिए का कोई मतलब न हो, पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो खयाल करना चाहिए! जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का सूतक होता है और वह यहाँ सड़क पर बाजार में आकर खरबूजे बेचने बैठ गई है।
हज़ार आदमी आते-जाते हैं। कोई क्या जानता है कि इसके घर में सूतक है। कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका ईमान-धर्म कैसे रहेगा? क्या अँधेर है!"

शब्दार्थ –
दियासलाई – माचिस
खसम – पति
लुगाई – पत्नी
परचून की दुकान – दाल आदि की दुकान
सूतक – छूत

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

व्याख्या –

लेखक कहता है कि सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने माचिस की तीली से कान खुजाते हुए कहा अरे, इन छोटे वर्ग के लोगों का क्या है? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए सिर्फ रोटी ही सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है।इनके लिए बेटा-बेटी, पति-पत्नी, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

इन छोटे लोगों के लिए कोई भी रिश्ता रोटी नहीं है। लेखक कहता है कि दाल आदि की दुकान पर बैठे लाला जी ने उस औरत के बारे में बात करते हुए कहा कि अरे भाई, इन छोटे वर्ग के लोगों के लिए मरे जिए का कोई मतलब हो या न हो, पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो इन लोगों को ख्याल करना चाहिए। जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का छूत होता है और वह यहाँ सड़क पर बाजार में आकर खरबूजे बेचने बैठ गई है। हज़ार आदमी आते-जाते हैं। किसी को क्या पता कि इसके घर में किसी की मौत हुई है और अभी सूतक है। कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका ईमान-धर्म कैसे रहेगा? सब नष्ट हो जाएगा।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

5. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता लगा-उसका तेईस बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में कछियारी करके परिवार का निर्वाह करता था। खरबूजो की डलिया बाजार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती।

लड़का परसों सुबह मुँह-अँधेरे बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डँस लिया।

शब्दार्थ –
बरस – साल
कछियारी – सब्जियाँ उगाने का काम
निर्वाह – पालन पोषण
मेड़ – दो खेतों की सीमा
विश्राम – आराम

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

व्याख्या –

जब लेखक को उस औरत के बारे में जानने की इच्छा हुई तो लेखक ने वहाँ पास-पड़ोस की दुकानों से उस औरत के बारे में पूछा और पूछने पर पता लगा कि उसका तेईस साल का एक जवान लड़का था। घर में उस औरत की बहू और पोता-पोती हैं। उस औरत का लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में सब्जियाँ उगाने का काम करके परिवार का पालन पोषण करता था। खरबूजो की टोकरी बाजार में पहुँचाकर कभी उस औरत का लड़का खुद बेचने के लिए पास बैठ जाता था, कभी वह औरत बैठ जाती थी। पास-पड़ोस की दुकान वालों से लेखक को पता चला कि लड़का परसों सुबह अँधेरे में ही बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। खरबूजे चुनते हुए उसका पैर दो खेतों की गीली सीमा पर आराम करते हुए एक साँप पर पड़ गया। साँप ने लड़के को डँस लिया।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

6. लड़के की बुढ़िया माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए। घर में जो कुछ आटा और अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे 'भगवाना' से लिपट-लिपटकर रोए, पर भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था।

ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ।

शब्दार्थ –
बावली- पागलों की तरह
ओझा – झाड़-फूँक करने वाले
दफे – बार
छन्नी-ककना - ज़ेवर

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

व्याख्या –

लेखक कहता है कि जब उस औरत के लड़के को साँप ने डँसा तो उस लड़के की यह बुढ़िया माँ पागलों की तरह भाग कर झाड़-फूँक करने वाले को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा भी हुई। लेखक कहता है कि पूजा के लिए दान-दक्षिणा तो चाहिए ही होती है। उस औरत के घर में जो कुछ आटा और अनाज था वह उसने दान-दक्षिणा में दे दिया।

परन्तु कुछ भी नहीं हुआ क्योंकि सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था। माँ, बहू और बच्चे 'भगवाना' से लिपट-लिपटकर रोए, पर भगवाना जो एक बार चुप हुआ तो फिर न बोला। लेखक कहता है कि ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जा सकता है? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए उस लड़के की माँ के हाथों के ज़ेवर ही क्यों न बिक जाएँ।

संबंधित प्रश्न -

१. लेखक ने समाज के किस कुप्रथा पर व्यंग्य किया है?

२. भगवाना की माँ के सामने कौन -सी समस्या आ खड़ी हुई ?

३. समस्या के समाधान के लिए बुढ़िया ने क्या किया ?

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow